फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad
majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 357 मार्च 2018

# शुरू करें उज्जवल रूप से

साथी एक चीज बताओ जरा। यह बार-बार क्यों बोलते हो कि ''मजदूर'' को यह नहीं समझ आता, वह नहीं समझ आता, पहला पन्ना समझ नहीं आता, यह नहीं करता, वह नहीं करता, अपना हित नहीं समझता।

हाँ मैं भी यह बहुत सुनता हूँ आपसे और मन में आता है पूछूँ कि यह ''मजदूर'' कौन है ?

यह तो आप दोनों लड़ने वाली बात कर रहे हो। मैं जब ''मजदूर'' बोलता हूँ तो मैं किसी एक को चिन्हित नहीं करता। मैं एक आम नासमझी की बात करता हूँ। और जटिलतताओं से जो जूझ नहीं पाते उनको मैं ''मजदूर'' बोलता हूँ।

तो मेरे इस उदाहरण का जवाब दें। जब अचानक कई ''मजदूर'' काम बन्द कर देते हैं तो क्या वो नादानी से ऐसा करते हैं ? नासमझी में करते हैं ? और उनको कोई समझ नहीं है कि आगे क्या होगा?

नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं भी बहुत बार ऐसे माहौल से गुजरा हूँ। तब दाँव पे काफी कुछ लगा होता है, नादानी वाली बात तो नहीं होती। लेकिन एक रूटीन में बात अलग है।

तो फिर आगे सवाल यह उठता है कि तेरे ख्याल से दाँव के साथ सोच जुड़ी है। दाँव बढता है तो सोच तीखी हो जाती है। और दाँव गिरे तो सोच गायब। कुछ ऐसा ही बोल रहे हो ना आप ?

इस सवाल में मैं भी जोड़ना चाहती हूँ। लोकल ट्रेन में ड्युटी के समय दाँव बढ जाता है तब सोचना गायब हो जाता है। मैं जानना चाहती हूँ कि दाँव के साथ तुम क्या समझाना चाहते हो ?

मुझे लगता है कि जीवन की शर्त लोगों की अपनी-अपनी होती है और उस पर चुप रहते हैं। इसलिये भी दूसरे की शर्त नहीं सुनाई देती। अपनी शर्त छुप गई, दूसरों की शर्त ढक गई तो एक-दूसरे को नीचा ही देखेंगे और ऊँच-नीच का महिमामण्डन होगा।

मेरी बात को आप सब बेतुके से इधर-उधर ले गये हो। मुझे अपमानित कर रहे हो। मैं रोज लोगों से बात करने की कोशिश करता हूँ और विफल महसूस करता हूँ। आज भी वैसा ही हो रहा है।

गुस्सा मत करो। यह बहस बहुत दिन की है। सवाल यह है कि अगर हम एक-दूसरे के लिये निम्नतर स्तर रखेंगे तो वही ढूँढेंगे, वही दिखेगा। अगर इसके विपरीत सोचें हम? जैसे मैं आपको देख कर सोचूँ कि यह बहुत मोटी किताबें पढता है, दस कार्यस्थलों के अनुभव पच्चीस लोगों के बीच बेहतरीन ढँग से रखता है, और पच्चीस के सौ जगह काम करने के अनुभव अपने में समेटता है तो आपको मैं नासमझ तो नहीं बोलुँगा। अगर बोलुँगा तो मेरी बेवकूफी है।

मैं इस बातचीत में थोड़ा आना चाहता हूँ। अभी आपके जो ''मजदूर'' हैं उनको लेबर कोर्ट से कोई मतलब नहीं रहा। जितने भी विवाद देखो तो वो सारे क्रिमिनल कोर्ट में ले कर जाती हैं मैनेजमेन्ट। कुछ हजार जमानत नहीं मिलने के कारण जेल में हैं। कई को बेतुके-ही दोषी ठहरा कर जेल में बन्द कर रखा है। क्या यह बुद्धु ''मजदूर'' का लक्षण है ?

यहाँ मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ। आज जो भी काम में घुस रहे हैं वो भाषा में निपुण हैं, टैक्नोलॉजी में निपुण हैं, बातचीत में - ग्रुप बनाने में - दूसरों के ग्रुपों में शामिल होने में तेज हैं।

मैं भी इस बातचीत में कुछ योगदान देना चाहती हूँ। अपराध की खबरें पढ लीजिये या लड़का-लड़की के भागने के समाचार पढ लें, आप पायेंगे कि एक आम रिपोर्टर भी एक युवा ''मजदूर'' को कितना दिमाग वाला और हिम्मतवाला दिखा बैठते हैं। जब घटना नहीं समझा पाते तब बुद्धि और हिम्मत की बात की जा सकती है।

हाँ। जब नहीं समझ पाते तो यह बेहतर होगा कि तिरस्कार करने, छोटा दिखाने की बजाय थोड़ा रहस्य, थोड़ा आकर्षण, और बुद्धि तथा साहस में बराबरी में देखें।

तो क्या आप सब का कहना है कि मैं अपने अनुभवों के विपरीत सोच को ज्यादा भाव दे देता हूँ ?

शायद आम को नीचा तथा खास में वाह-वाह वाला रुटीन विभाजन कर एक-दूसरे को त्रिशंकू बना देते हैं।

व्यक्ति हों चाहे समूह, श्रेष्ठ उज्जवल रूप जो उभरे हैं उन्हें सामने रख कर सोच को बनायें, बढायें, गति दें।

यही तो जीवन है।

# बहुत कमजोर हैं कम्पनियाँ

मालिकों , फैक्ट्री मालिकों का दौर 1860 में लड़खड़ाने लगा था। दस-बारह द्वारा मिल कर फैक्ट्री लगाना, ज्वाइन्ट स्टॉक कम्पनियों का बनना इसका एक लक्षण था। फिर हजारों शेयर होल्डरों से पैसे जुटाना फैक्ट्री स्थापना के लिये आवश्यक हो गया। फैक्ट्री की बढती साइज और बढती लागत के कारण फिर फैक्ट्री लगाने के लिये धन का मुख्य स्रोत कर्ज बना। मालिकों का स्थान चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर, प्रेसीडेन्ट, सी ई ओ ने लिया, मैनेजमेन्ट ने लिया। कम्पनियों से तनखा लेते, कम्पनियों से चोरी करते कम्पनियों के इन मुखियाओं को मालिक कहने का चलन रुका नहीं है। नेता, अखबार, रेडियो, टी वी ''कम्पनी मालिक'' का प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। लेकिन एक सौ वर्ष से कमजोर होती आई कम्पनियाँ इधर बहुत कमजोर हो गई हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं बनाये और उनकी सरकारों द्वारा बनाये गये नियम-कानून लागू किये जायें तो कम्पनियाँ बन्द हो जायेंगी। कम्पनियों द्वारा फैक्ट्रियों में, ट्रान्सपोर्ट में, मार्केटिंग में इनकी सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनत वेतन, आठ घण्टे की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे दुगनी दर से, स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर रखना लागू किये जायें तो दुनिया में अधिकतर कम्पनियाँ बन्द हो जायेंगी।

✶**कलमकारी** (383 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात सवा आठ की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

✶ नाइट शिफ्ट से लौटे **कॉन्टिनेन्टल ऑटोमोटिव** (16 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री वरकरों ने कम्पनी ठीक है कहते हुये कहा : फैक्ट्री में 50-60 परमानेन्ट मजदूर हैं। डेढ-दो सौ ट्रेनी हैं, एक वर्ष का पत्र देते हैं, 15 महीने बाद भी निकाल देते हैं, ई एस आई तथा पी एफ काट कर 10,500 रुपये देते हैं। सात-आठ साल से किसी वरकर को परमानेन्ट नहीं किया है। आई टी आई किये 300 को ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा है, ई एस आई तथा पी एफ काट कर 8600 रुपये देते हैं। जुलाई 2017 से डिप्लोमा किये 60-70 लड़कियों को भी ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा है, 11500 रुपये में। परमानेन्ट मजदूरों की तनखा भी कम है , दस साल पहले परमानेन्ट हुओं की 11,500 रुपये। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे वरकरों के साथ बहुत दुर्व्यवहार करते हैं — शिफ्ट आरम्भ होने से 20 मिनट पहले अन्दर आओ और शिफ्ट छूटने के समय से एक मिनट पहले गेट पर पहुँचे तो...... मारुति सुजुकी, महिन्द्रा, हीरो, बजाज वाहनों के स्पीड़ सैन्सर का उत्पादन, काम का बहुत ज्यादा दबाव। टारगेट जो 1600 था उसे इधर जनवरी से 2270 कर दिया है और धमकी देते हैं कि प्रोडक्शन नहीं दोगे तो नो एन्ट्री कर देंगे। ✶**फैशन लैदर** (नाम पूरा नहीं पता, ओखला फेज-2 दिल्ली) फैक्ट्री में 250 वरकर लैदर ट्राउजर, जैकेट, लेडीज बैग निर्यात के लिये बनाते हैं। मात्र 25-30 की ई एस आई तथा पी एफ हैं। महिला हैल्परों की तनखा 6000-6500-7000 रुपये और पुरुष हैल्परों की 8000-8500-9000 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नही।

✶**ग्लोबल ऑटो** (27 बी सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 30 परमानेन्ट और 250 टेम्परेरी वरकर हैं। हैल्परों को प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 10,000 रुपये देते हैं। तनखा बैंक में भेजते हैं, ई एस आई है, पी एफ है। पर हाँ, ओवर टाइम नहीं दिखाते और तनखा ही दस हजार दिखाते हैं।

✶**मोडलामा** (105-6 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में आधे से ज्यादा वरकरों को, करीब तीन हजार को **ग्रीनबैक इन्टरनेशनल** (बी-57 ओखला फेज-1, दिल्ली) के कार्ड दिये हैं। फैक्ट्री में नाइट शिफ्ट रात 8 से अगली सुबह पौने सात बजे की है। भोजन और चाय ब्रेक के 45 मिनट काट लेते हैं। दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगनी दर से। प्रोडक्शन की मारामारी है , बाथरूम जाने में भी चिक-चिक करते हैं।

✶**ए जी इन्डस्ट्रीज** (8 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 100 परमानेन्ट मजदूर तीन शिफ्टों में हैं और चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 900 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 33 से 39 रुपये 85 पैसे प्रति घण्टा। और, गड़बड़ी कर हर महीने ओवर टाइम के 200-300 रुपये खा भी जाते हैं। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं। एक ठेकेदार कम्पनी तो मजदूरों को पी एफ नम्बर बताती ही नहीं। और जिन वरकरों को पी एफ नम्बर बताये हैं वे ऑनलाइन देखते हैं तब भारी गड़बड़ी पाते हैं — 2-3-4-5 वर्ष से काम कर रहों का पी एफ खाता 4000-5000-10,000 रुपये ही दर्शाता है।

✶**रादनिक एक्सपोर्ट** (बी-22 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में काम करते करीब 600 वरकरों में से 400 की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। तीन महीने, छह महीने में ब्रेक कर नई भर्ती करते रहते हैं।

✶**श्री भिक्षु कम्पोनेन्ट्स** (383 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में यामाहा बाइक के रोटर बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। करीब 90 हैल्परों की तनखा 6800 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

✶**ओमैक्स ऑटो** (6 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 200 परमानेन्ट मजदूर, 175 '' कैजुअल वरकर'', और पाँच-सात ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1000 मजदूर काम करते हैं। धारूहेड़ा में 1985 में फैक्ट्री की स्थापना करने वाली ओमैक्स कम्पनी की भारत-भर में आज 9 फैक्ट्रियाँ हैं। मानेसर फैक्ट्री में आठ-दस वर्ष से कम्पनी रोल पर लगातार ड्युटी कर रहे 175 मजदूर कानून अनुसार वर्कमैन हैं, परमानेन्ट मजदूर हैं। लेकिन ओमैक्स मैनेजमेन्ट उन्हें ''कैजुअल वरकर'' कहती रही है। और 2017 की दिवाली के पहले से स्टाफ वाले कहते रहते हैं कि फलाँ तारीख से सब 175 को निकालेंगे। ✶ **अल्पाइन एक्सपोर्टस** (सी-102 ओखला फेज-1, दिल्ली) कार्यस्थल पर 70 वरकर पैकिंग तथा डिस्पैच का काम करते हैं, उत्पादन सूरत में होता है। सुबह 9 से साँय 7 की शिफ्ट है पर ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं। दस घण्टे रोज पर महीने में हैल्पर को 9600 और कारीगर को 10,500 रुपये। ई एस आई तथा पी एफ हैं। नये ग्रेड (3 मार्च 2017 से लागू) के बारे में टालमटोल पर वरकर तालमेल बढा रहे हैं।

✶**विंग्स ऑटो** ( 31 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में अधिकतर वरकर लेडीज हैं। प्रैस शॉप में चारों तरफ कैमरे लगे हैं, एक मिनट नहीं बैठ सकते, और यहाँ भी महिला मजदूर हैं। सुबह 8 और 9 बजे शिफ्ट आरम्भ होती हैं पर छूटने का कोई समय नहीं, रोज दो-तीन-चार घण्टे ओवर टाइम, पैसे सिंगल रेट से। क्या-क्या बतायें! दस्ताने नहीं, मास्क नहीं, सेफ्टी शूज नहीं.... ✶**हयाकावा इलेक्ट्रोनिक्स** (64 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में महिला मजदूर ज्यादा हैं। सुबह 7 से दोपहर बाद साढे तीन की ड्युटी है पर जबरन 5 बजे तक रोक लेते हैं ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ✶**गुप्ता एग्जिम** (45 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में तनखा और ओवर टाइम के भुगतान में देरी पर देरी। फरवरी के आरम्भ में फैक्ट्री में मजदूरों ने जनरल मैनेजर की पिटाई की। घबराये मैनेजमेन्ट के लोग मजदूरों को डराने के लिये पिस्तौल रखने पर चर्चायें कर रहे हैं।


रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

**फरीदाबाद मजदूर समाचार**

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2018 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

अनुभव

# गैलेक्सी वॉग्

115 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित गैलेक्सी वॉग् फैक्ट्री में सैम्पलिंग-प्रोडक्शन-इम्ब्राइड्री में 200 मजदूर हैं। इम्ब्राइड्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। सैम्पलिंग और प्रोडक्शन में सुबह साढे नौ से रात सवा आठ की शिफ्ट और रात 10, 12, 1 बजे तक रोक लेते हैं। प्रतिदिन दो घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और बाकी के घण्टों के सिंगल रेट से। आई एम टी मानेसर में फैक्ट्री से मैनेजमेन्ट कई मजदूर यहाँ लाई है। वहाँ बोनस देते हैं पर यहाँ उद्योग विहार फैक्ट्री में इम्ब्राइड्री वरकरों तथा स्टाफ के लोगों को ही बोनस देते हैं। सैम्पलिंग और प्रोडक्शन मजदूरों को 2015 तथा 2016 का बोनस नहीं दिया।

तनखा में देरी। मार्च 2017 की तनखा 25 अप्रैल तक नहीं दी और बोले 5-5 हजार ले लो, पैसे आयेंगे फिर देंगे, करना है करो अन्यथा जाओ। अगले दिन, 26 अप्रैल को सैम्पलिंग टेलर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये, 5-5 हजार लेने से इनकार किया, तनखा माँगी, बाहर फैक्ट्री गेट पर बैठे रहे। मैनेजमेन्ट ने 12 बजे तक नहीं बुलाया तो सब (दस) सैम्पलिंग टेलर राजीव चौक के पास लेबर डिपार्टमेन्ट गये। वकील किया। फाइल बनाने के 800-800 रुपये, कुल 8000 लिये।

तारीख पड़ने लगी। पहली 3 मई 2017 को पड़ी। सैम्पलिंग टेलरों के वकील ने तनखा, ओवर टाइम, बोनस के पैसे देने और ड्युटी पर लेने की बातें की। कम्पनी का वकील बोला कि निकाले नहीं हैं, आ नहीं रहे, अब लेंगे भी नहीं।

फैक्ट्री में उत्पादन जारी। कम्पनी ने नये सैम्पलिंग टेलर भर्ती कर लिये।

तब से 8 तारीख पड़ चुकी हैं। अब 4 मई 2018 को अगली तारीख है। हर तारीख पर सब दस सैम्पलिंग टेलर श्रम विभाग जाते रहे हैं।

# सुरक्षाकर्मी

कम्पनियों द्वारा अपने गार्ड रखना बन्द-सा हो गया है। सेक्युरिटी एजेन्सियाँ/कम्पनियाँ बनी हैं जो गार्ड सप्लाई करती हैं। सामान्यतः गार्ड 12-12 घण्टे की शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं होता। त्यौहारी छुट्टी नहीं होती। महीने के तीसों दिन, साल के 365 दिन गार्ड की ड्युटी रहती है। गार्ड सप्लाई करने वाली सेक्युरिटी कम्पनी बड़ी है अथवा छोटी है इससे इस सब में कोई फर्क नहीं पड़ता। गार्ड को जो महीने के कह कर पैसे दिये जाते हैं वो वास्तव ढाई महीने की तनखा होती। आठ घण्टे 26 दिन पर एक महीने की तनखा। चार घण्टे ओवर टाइम 26 दिन पर एक महीने की तनखा। तीसों दिन ड्युटी पर साप्ताहिक अवकाश के 4-5 दिन 12 घण्टे ड्युटी पर 15 दिन की तनखा। इसलिये महीने के 15000 दिये तो तनखा बनी 6000 रुपये। गार्ड की तनखा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी काफी कम होती है।

✶**प्रो-लाइन सेक्युरिटी कम्पनी** (मुख्यालय सुशान्त लोक, गुड़गाँव) 8-9 हजार गार्ड सप्लाई करती है। गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 13,000 रुपये — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर।

**सेन्टीनल सेक्युरिटी** के पास कुल 30,000 गार्ड हैं जिनमें से ओखला ओद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली में 2000 गार्ड सप्लाई करती है। ओखला में गार्ड को 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर 30 दिन के 12,800 रुपये — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर। मात्र दो जगह, सोनी तथा इन्टरटेक में 3 मार्च 2017 से 12 घण्टे प्रतिदिन पर 30 दिन के 20,000 रुपये। (ढाई महीने के बीस हजार मानी तनखा आठ हजार।) गार्ड को 12,800 तो क्लायन्ट से सेन्टीनल कम्पनी ने 24-25 हजार लेना। और गार्ड को 20 हजार तो क्लायन्ट से सेन्टील ने 36 हजार लेना। गार्ड की ग्रेच्युटी बनने ही नहीं देते सेन्टीनल में, पाँच साल होने ही नहीं देते, ब्रेक करते रहते हैं।

✶ गुड़गाँव जोन में **ग्रुप फोर** कम्पनी अब गार्ड को 8800 रुपये तनखा देती है। यानि, 8 घण्टे 26 दिन ड्युटी के 8800 जिनमें से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटी जाती है। ग्रुप फोर ने अब साप्ताहिक अवकाश गार्डों के लिये लागू कर दिया है। लेकिन ड्युटी 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ही है। चार घण्टे ओवर टाइम की अलग स्लिप देते हैं जिसमें ई एस आई के 180 रुपये काटते हैं पर पी एफ की कोई राशि नहीं काटते। ग्रुप फोर गार्ड को अब 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 12,800 रुपये और क्लायन्ट से ग्रुप फोर कम्पनी करीब 24000 रुपये लेती है।

# साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

**— शुक्रवार, 30 मार्च को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।**

**— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 29 मार्च को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।**

**— शनिवार, 31 मार्च को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।**

✶ फरीदाबाद में मार्च में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782
ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

## मजदूर समाचार में योगदान

- ✶ अपने कदम और अपने साथियों के कदमों की जानकारियाँ सामुहिक करें।
- ✶ चर्चाओं में योगदान के लिये बाँटने वालों से प्रतियाँ ले जायें।
- ✶ फुर्सत मिले तो किसी भी रविवार को मजदूर लाइब्रेरी में आ कर विस्तार से जीवन चर्चा करें।
- ✶ आर्थिक सहयोग का मन हो तो जरूर दें। ज्यादा से ज्यादा छपने की क्षमता वाद-विवाद को फैलायेगी। इस योगदान में कोई भी राशि कम नहीं है।
- ✶ व्हाट्सएप पर खुल कर मैसेज भेजिये, हम जम कर पढ रहे हैं और बातों को फैला रहे हैं।
- ✶ आज मजदूर समाचार के पाठक अखबार में कविता, फलसफा, दर्शन, साहित्य और ज्ञान-चर्चा के विभिन्न रूप का आनन्द ले रहे हैं। आनन्द को उल्लास में बदलिये।

**हरियाणा सरकार** ने फैक्ट्री मजदूरों के लिये 1 जुलाई 2017 से देय महंगाई भत्ते (डी ए) की घोषणा ही नहीं की। इधर 1 जनवरी 2018 से देय महंगाई भत्ते की घोषणा 7 मार्च तक सरकार ने नहीं की थी।

हरियाण के मुख्य मंत्री की ईमेल :
< cmharyana@nic.in>
हरियाण के श्रम मंत्री के कार्यालय का फोन नम्बर :
0172 — 2740523

# करते हैं, और करिये, फैलाइये

★**कैलाश रिबन** (403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में मजदूरों द्वारा जनवरी-अन्त में काम बन्द करने का असर यह रहा कि परमानेन्ट वरकरों को मैंनेजमेन्ट ने तनखा समय पर दे दी। लेकिन टेम्परेरी वरकरों को जनवरी का वेतन 20-21 फरवरी को जा कर दिया। और, ओवर टाइम के पैसे किसी को भी 26 फरवरी तक नहीं दिये थे। वीविंग डिपार्ट में कारीगर कम हैं, एक कारीगर दो मशीनें चलाता था और बदले में कम्पनी 150 रुपये अतिरिक्त देती थी। इधर पाँच दिन फैक्ट्री में प्रवेश से इनकार करने के बाद अन्दर आये कारीगरों ने अतिरिक्त काम के लिये 250 रुपये देने को कहा तो मैनेजमेन्ट नहीं मानी। तीन सप्ताह से कारीगर एक-एक मशीन चला रहे हैं, दिन-रात 25 मशीनें बन्द रहती हैं।

★**कैपिटल रेडियो** (बी-6/4 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में काम करते 100 मजदूरों के लिये नया ग्रेड मई 2017 में लागू किया और 3 मार्च से एरियर भी दिया। जिन्हें डेली वेज वाले कहते हैं उन्हें 8 घण्टे के 500 रुपये किये। फिर जुलाई में कम्पनी बोली कि ओवर टाइम सिंगल रेट से देंगे..... ड्युटी सुबह 8½ से साँय 5 बजे की है और ओवर टाइम होता है तब सुबह 6 से 8 बजे तक, फिर आधे घण्टे के ब्रेक के बाद सामान्य ड्युटी। कैपिटल रेडियो फैक्ट्री दरियागंज में 1955-56 में शुरू हुई थी और तब से ओवर टाइम का भुगतान कानून अनुसार दुगुनी दर से था। दरियागंज से 1999 में फैक्ट्री ओखला शिफ्ट हुई तब बोले थे कि ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देंगे। दो साल तक किसी वरकर ने ओवर टाइम नहीं किया। भुगतान दुगुनी दर से किया तब मजदूर फिर ओवर टाइम करने लगे थे...... कम्पनी जिन 25 को डेली वेज कहती है वे 3-4-5 वर्ष से फैक्ट्री में काम कर रहे हैं लेकिन उनकी ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, साप्ताहिक अवकाश नहीं, त्यौहारी छुट्टियाँ नहीं, पैसे महीने में, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से (दरियागंज में डेढ की दर से थे)..... जुलाई 2017 से ओवर टाइम सिंगल रेट से करने की घोषणा का डेली वेज पर कोई असर नहीं और वे सुबह 6 बजे पहुँचने लगे। लेकिन 75 परमानेन्ट मजदूर 1999 की राह चले। परमानेन्ट वरकरों ने ओवर टाइम से इनकार किया..... फोरमैन तोड़ने में लगे हैं।

★**इण्डो ऑटोटेक IIप्लान्ट** (261 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 28 फरवरी को मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाया : 2 मार्च (दुल्हण्डी) को ड्युटी करोगे तो 350 की दिहाड़ी के साथ 500 रुपये इनाम। फिर 3 और 4 मार्च को भी ड्युटी करोगे तो दिहाड़ी के संग 300-300 रुपये इनाम। जे सी बी कम्पनी से बड़ा आर्डर। इण्डो कम्पनी के फरीदाबाद में II प्लान्ट और सैक्टर-25 में चौथे प्लान्ट में जे सी बी के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। कम्पनी की आई एम टी मानेसर, टपुकड़ा (अलवर), और बेंगलुरू में भी फैक्ट्रियाँ हैं।

जनवरी-आरम्भ में मैनेजमेन्ट ने रविवार को ड्युटी का नोटिस लगाया तो दिन शिफ्ट में भोजन के बाद मजदूरों ने काम आरम्भ नहीं किया। सब वरकर एक जगह एकत्र हो गये। स्टाफ वाले तुरन्त पहुँचे। काम शुरू करवाने के लिये 2017 के 6 रविवार के बकाया पैसे और आगे से रविवार के पैसे हर महीने देने का आश्वासन।

फरवरी में मैंनेजमेन्ट ने दिन की शिफ्ट में वरकरों से मीटिंग कर कहा कि आप में से कुछ को परमानेन्ट करेंगे। इस साल वर्दी देंगे.... इण्डो के II प्लान्ट में अभी सक वरकर टेम्परेरी हैं, ठेकेदार कम्पनियें के जरिये 500 मजदूर रखे हैं। शीट मैटल का काम है, सेफ्टी शूज नहीं, वर्दी नहीं।

इधर हर मजदूर को 4 लड्डू और 100 रुपये वाला लन्च बॉक्स दिया तब स्टाफ वाले बता रहे थे कि फैक्ट्री से दो महीने में 20 करोड़ रुपये का माल डिस्पैच हुआ है। इण्डो II प्लान्ट में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। इधर जनवरी और फरवरी में प्रत्येक रविवार को ड्युटी और मात्र दिहाड़ी में।

★**क्रियेटिव इम्पैक्स** (सी-55/2 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में 17-18 महीने का पी एफ कम्पनी ने जमा नहीं किया। जनवरी की तनखा भी 11 फरवरी को तब दी जब मजदूरों ने काम बन्द किया। फैक्ट्री में करीब 1500 वरकर हैं और सब कम्पनी द्वारा स्वयं रखे गये हैं। तनखा लेने के बाद मजदूरों ने फण्ड जमा करवाने के लिये काम बन्द किया। कोई हल्ला-गुल्ला नहीं किया। ड्युटी के समय सुबह 9 बजे फैक्ट्री पहुँचते और अपनी-अपनी जगह बैठे रहते। उत्पादन बन्द हुये चार दिन हो गये तब मैनेजिंग डायरेक्टर फैक्ट्री आया। साहब बोला कि दो-दो महीने का करके 31 मार्च तक पी एफ की सब राशि जमा कर देंगे। मजदूरों ने काम आरम्भ कर दिया। कम्पनी ने 24 फरवरी को तीन महीने के पी एफ की राशि जमा की।

## इनके कानून, इनका पालन

## रूप ऑटोमेटिव

रूप ऑटो कम्पनी की सोहना, मानेसर, साणंद (गुजरात), चेन्नई में सात फैक्ट्रियाँ हैं। यहाँ 439-40 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर फैक्ट्री के मजदूरों की बातों पर विचार करें।

फैक्ट्री में फोर्ड और नैनो, आयशर, मारुति सुजुकी वाहनों के स्टीयरिंग तथा उसके पार्ट्स बनते हैं। स्टाफ के 50 लोग तथा वरकरों में चार-पाँच सैन्टर ही परमानेन्ट हैं। सी एन सी, वी एम सी, एस पी एम मशीनों के ऑपरेटर तथा अन्य मजदूर टेम्परेरी हैं। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 700 वरकर रूप ऑटोमोटिव फैक्ट्री में काम करते हैं। काम स्थाई है और मजदूर अस्थाई हैं। इनका कानून है : परमानेन्ट काम के लिये परमानेन्ट मजदूर।

रूप फैक्ट्री में सुबह 6½ से साँय 5 तक और साँय 5 से अगली सुबह 6½ बजे तक की दो शिफ्ट हैं। दिन में 10½ घण्टे और रात में 13½ घण्टे की शिफ्ट। इनका कानून : 8 घण्टे की शिफ्ट।

इनका कानून : आठ घण्टे बाद ड्युटी ओवर टाइम है और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। रूप ऑटो फैक्ट्री में ओवर टाइम के पैसे 50 रुपये प्रति घण्टा। ऑपरेटरों की तनखा 8300-8500-8800-9000 रुपये।

इनका कानून : तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं। (अन्यथा 8 घण्टे ड्युटी और साप्ताहिक अवकाश का कोई अर्थ नहीं।) रूप ऑटो फैक्ट्री में हर महीने 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम के।

इनका कानून : पी एफ की राशि अगले महीने की 15 तारीख तक जमा करना। हर महीने जमा करना। रूप ऑटो फैक्ट्री मजदूरों को पी एफ नम्बर बताये हैं और वरकर ऑनलाइन देखते हैं तब डेढ-दो साल से ड्युटी कर रहों का दो महीने का फण्ड जमा दिखता है।

इनका कानून : तनखा की पर्ची देना। रूप ऑटो फैक्ट्री में मजदूरों को सैलेरी स्लिप नहीं देते।

इनका कानून : लोहे का काम हो वहाँ सेफ्टी शूज, दस्ताने देना। रूप ऑटो फैक्ट्री में लोहे का काम है लेकिन मजदूरों को सेफ्टी शूज नहीं देते, दस्ताने नहीं देते, वर्दी नहीं देते।

इनका कानून : निर्धारित 12 महीने की अवधि में एक महीने भी ड्युटी की है तो मजदूर का बोनस बनता है। रूप ऑटो फैक्ट्री मैनेजमेन्ट कहती है कि तीन महीने ड्युटी वालों का बोनस बनता ही नहीं। और, और 11 महीने ड्युटी की पर दिवाली के समय फैक्ट्री में नहीं हैं तो उन वरकरों को भी रूप मैनेजमेन्ट बोनस नहीं देती।

रूप मैनेजमेन्ट के हिसाब से जो राशि ओवर टाइम की बनती है उसमें भी हर महीने 200-300 रुपये की गड़बड़ी करते हैं। पंचिंग मशीन में गड़बड़ी के कारण हर महीने 8-10 वरकरों की हाजरी में गड़बड़ी। ई एस आई टेम्परेरी कार्ड ही देते हैं जो मजदूरों के किसी काम के नहीं। और, एन डी ओ (नाइट ड्युटी अफसर) बन कर मैनेजर बदल-बदल कर आते हैं : टारगेट पूरा कर सुबह 5 बजे झपकी लेते की फोटो ले कर मजदूर के 13½ घण्टे को जीरो बना देते हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।